Raymond Firth

Raymond Firth ने सामाजिक संरचना का सिद्धांत दिया है। इनके द्वारा लिखी कुछ पुस्तकें :-

1. We, the Tikopia
2. Elements of social Organization

इन्होंने अफ्रीका के टिकोपिया (Tikopia) जनजाति का अध्ययन किया था। वह रेडक्लिफ ब्राउन के छात्र थे इसीलिए संरचना प्रकार्यवाद से प्रेरित थे लेकिन उन्होंने सम्पूर्ण तरीके से संतुलित व्यवस्था के बारे में नहीं कहा क्योंकि कुछ परिवर्तन की चर्चा किया और यह परिवर्तन सामाजिक संगठनों के सिद्धान्त के माध्यम से दिया। उन्होंने संरचना प्रकार्य और संगठनों का विश्लेषण किया और कहा सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए ये तीनों विचार एक दूसरे से जुड़े हैं।

संरचना, सामाजिक संबंधों का स्वरूप प्रस्तुत करता है जबकि प्रकार्य संरचना के अंगों का लक्ष्य प्रगति की ओर प्रेरित है और संगठन क्रियाओं को दिशा प्रदान करता है। इन्होंने विविध मानवशास्त्रियों का संरचनात्मक विश्लेषण किया —

(A) संरचना अंगों का व्यवस्थित ढंग होगा जिसमें सामाजिक जीवन के तत्व अन्तर्सम्बन्धित होगा।
(B) ये सामाजिक संबंध एक-दूसरे के ऊपर निर्माण किया गया है और इसमें कई प्रकार की जटिल व्यवस्थाये हैं;
(C) इसका महत्व एक पल के लिए नहीं होता है। बल्कि बाकी समय के लिए होता है। क्योंकि इसमें कुछ स्थिरता व स्थायित्वता मिलता है।

Scanned by CamScanner

इस प्रकार संरचना का अर्थ है जो समाज को स्वरूप देता है, सदस्यों से क्रियाएँ करवाता है, उनके अपेक्षाओं की पूर्ति करता है। आदर्श-विश्वासों को बराबर रखता है। क्या करना चाहिए, क्या होना चाहिए? इसके बारे में भी तय करता है। अगर किसी समाज को ढंग से काम करना है तो उसमें एक सह-संयोजित संरचना होनी चाहिए, उसमें सदस्यों में कोई विचार होना चाहिए कि क्या अपेक्षायें करें? और दूसरे लोग कैसे क्रियायें करें? अगर ऐसा नहीं होगा, तो लोग अपने जीवन को व्यवस्थित ढंग से नहीं ला पायेगा। यह ~~केवल~~ एक प्रकार का सोच है, दूसरे सोच में संरचना सिर्फ आदर्श नहीं है। जबकि प्रयोगात्मक रूप से वास्तविकता शामिल है। इस प्रकार संरचना एक विश्लेषणात्मक उपकरण है जिससे सामाजिक जीवन में लोगों को कैसे व्यवहार करना है या क्या करना चाहिए, यह पता चलता है। इस प्रकार संरचना का महत्व उसकी जटिल संबंधों में है। ये ऐसे संबंध हैं जिसके नहीं होने पर समाज का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। इसीलिए लोगों को इन जटिल संबंधों को बरकरार रखना चाहते हैं।

प्रकार्य:- प्रकार्य सामाजिक क्रियाओं का प्रकार्य होता है और हर सामाजिक क्रिया का एक से अधिक प्रकार्य हो सकता है।

सामाजिक प्रकार्य की परिभाषा:- ये एक सामाजिक क्रिया व व्यवस्था के बीच में संबंध है। इसमें माध्यम एवं लक्ष्य के बीच में संबंध है। ये थोड़ा-बहुत मैलिनोस्की ने आवश्यकता का सिद्धान्त दिया। Firth ने कहा मनुष्यों की आवश्यकताओं का जानना एक

Scanned by CamScanner

मुश्किल काम है। उनका व्यवहार से है, उनकी क्या-क्या आवश्यकता है तथा आवश्यकताएं कभी-कभी अमूर्त होती है।

सामाजिक संगठन : जैसे पहले कहा गया है कि सामाजिक संगठन सामाजिक संरचना के अंतर्गत आता है जो सामाजिक संरचना में अति महत्वपूर्ण संबंध होते हैं उसे जटिल संबंध कहते हैं। इसका अर्थ है इनके बगैर सामाजिक संरचना का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। इसलिए व्यक्ति बरकरार रखना चाहता है और उसको बरकरार रखने के लिए विकल्पों का प्रयोग किया करता है, जैसे कि यदि मामा नहीं है तो मामा का पुत्र 'मामा' की भूमिका निभाता है।

इस प्रकार व्यक्ति किसी न किसी रूप में कुछ विकल्पों का प्रयोग करता है तथा उन आदर्शों संबंधों को बरकरार रखता है। पितृवंशीय समाज में पिता-पुत्र संबंध होता है विकल्पों के प्रयोग के द्वारा कुछ परिवर्तन का विश्लेषण होता है। विकल्पों हेतु के प्रयोग के लिए दो महत्वपूर्ण तत्व है :—

① प्रतिनिधित्व

② उत्तरदायित्व

प्रतिनिधित्व → प्रतिनिधित्व का अर्थ है जो व्यक्ति विकल्पों का प्रयोग करेगा तो पूरे समुदाय की सहमति होगी तो वह पूरे समुदाय का प्रतिनिधित्व होगा।

Scanned by CamScanner

② उत्तरदायित्व :→ उस व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह उस विकल्प का प्रयोग करते हुए संरचना को नहीं बदल रहा है।

आलोचनात्मक विश्लेषण →

इस प्रकार Firth कुछ परिवर्तन के विश्लेषण किये ~~किन्तु~~ लेकिन इससे सम्पूर्ण संरचना का परिवर्तन शामिल नहीं है। इसीलिए इसको संरचना में परिवर्तन कहा जायेगा, संरचना का परिवर्तन नहीं। लेकिन Raymond Firth के विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि विकल्पों का प्रयोग हमेशा करते आये है।

Scanned by CamScanner